ओब्दयिहा, तुम्हारा मित्र

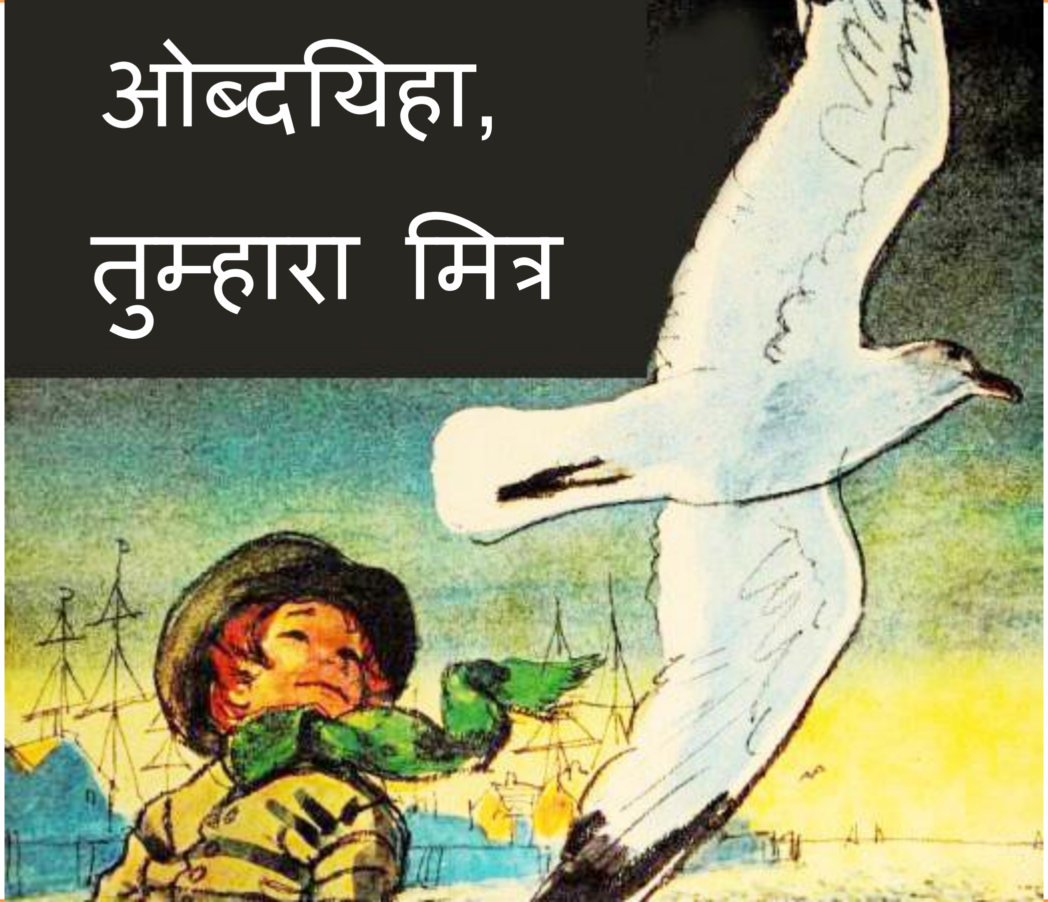

ओबदयिहा,

तुम्हारा मित्र

ओब्दयिहा जहाँ कहीं भी जाता था एक सीगल उसके पीछे-पीछे आता था. जब वह मोमबत्ती की दूकान पर गया तो सीगल सारे रास्ते उसके पीछे आया. जब वह दूकान से बाहर आया तो सीगल उसकी प्रतीक्षा कर रहा था.

जब वह ताज़ा मछली लेने के लिए गोदी पर गया तो सीगल फुदकता हुआ उसके पीछे-पीछे आया.

और रात के समय जब वह सोने के लिए बिस्तर में लेटता तो सीगल उसे खिड़की से दिखाई देता. हवा की ओर मुँह किये, वह एक शैड की चिमनी पर बैठा होता. नैनटकैट द्वीप पर जितने भी सीगल थे, उनमें से यह एक हर उस जगह क्यों जाता था जहाँ ओब्दयिहा जाता था?

पहली बार जब वह ओब्दयिहा के पीछे आया था, उस दिन सब गर्म कपड़ों में सजधज कर मीटिंग के लिए जा रहे थे. स्टारबक परिवार एक जुलूस की तरह एक कतार में चल रहा था. सबसे आगे माता और पिता थे. उनके पीछे मोसेस और एज़ा और रैबेका और ओब्दयिहा और रैचेल चल रहे थे. उन सबके पीछे सीगल फुदकता हुआ आ रहा था जैसे कि वह भी मीटिंग में भाग लेने आया था.

"तुम्हारा एक मित्र है, ओब्दयिहा," पिता ने कहा, जब मीटिंग हाउस के गेट पर उन्होंने घूम कर पीछे देखा.

"ओब्दयिहा का एक मित्र है," मोसेस ने कहा.

"ओब्दयिहा का एक मित्र है," रैबेका ने कहा.

"अपने मित्र से कहो कि मीटिंग के लिए भीतर आये," एज़ा ने कहा.

रैचेल ने उसे नहीं चिढ़ाया. उसने ओब्दयिहा का हाथ पकड़ना चाहा. लेकिन वह किसी का हाथ नहीं पकड़ना चाहता था. उसने एक पत्थर उठाया और उस पक्षी पर दे मारा. उसका निशाना नहीं लगा. सीगल उड़ कर दूर चला गया और गायब हो गया. लेकिन जब मीटिंग खत्म हुई और वह सब बाहर आये तो वह वहीं दिखाई दिया – वह उसकी प्रतीक्षा कर रहा था.

कुछ दिनों बाद ऐसी स्थिति हो गई कि ओब्दयिहा घर से बाहर जाना न चाहता था.

ब्रेकफास्ट के समय पिता ने कहा, “ओब्दयिहा, तुम्हारा मित्र कैसा है?”

“कौन सा मित्र?” ओब्दयिहा ने पूछा, उसका मुँह मफिन और जैम से भरा हुआ था.

“तुम्हारा अपना सीगल!” एज़ा ने कहा.

रैबेका हँसने लगी.

“वह पक्षी मेरा मित्र नहीं है!” ओब्दयिहा ने चिल्ला कर कहा.

माता ने ऊँगली उठाई. “दुःखी मत होवो, ओब्दयिहा,” उसने कहा. “मेरे विचार में यह अच्छी बात है कि ईश्वर का एक प्राणी तुम्हें चाहता है.”

“लेकिन मैं उसे पसंद नहीं करता,” ओब्दयिहा ने कहा. “सीगल दूसरे लोगों के पीछे तो यहाँ-वहाँ नहीं जाते.”

ब्रेकफास्ट के तुरंत बाद बर्फ गिरने लगी. दुपहर में माता ने ओब्दयिहा के गले पर एक ऊनी स्कार्फ लपेट दिया. उसे कुछ पैसे और एक थैला दे कर और आटा लेन के लिए उसे जैकब स्लेड की चक्की भेज दिया.

पक्षी कहीं दिखाई न दे रहा था. “शायद उसे बर्फ अच्छी नहीं लगती होगी,” जैकब स्लेड की चक्की ओर जाते हुए उसने अपने आप से कहा. “शायद वह उड़ कर मेनलैंड चला गया होगा.” यह देख कर कि पक्षी उसके पीछे न आ रहा था, वह बहुत खुश हुआ, इतना खुश कि जैकब स्लेड की चक्की तक सारे रास्ते वह बर्फ में जूतों से बतख के पाँव जैसे निशान बनाता गया.

चक्कीवाले ने उसके थैले में आटा भर दिया और ओब्दयिहा ने उसे वह पैसे दिए जो माँ ने उसके दस्ताने में संभाल रख थे.

“यह रखो, लड़के,” एक पेन्नी देते हुए जैकब स्लेड ने उससे कहा. “और इसे जेब से गिरा न देना.”

घर लौटते समय ओब्दयिहा ने एक जगह बर्फ पर खिसकने का प्रयास किया लेकिन वह फिसल गया और बर्फ में उल्टा गिर गया. उसकी टोपी उड़ कर दूर जा गिरी. उसके कानों और जूतों में बर्फ घुस गई. उसकी ब्रिचिज़ गीली हो गईं और आटे का थैला भी गीला हो गया. उसके घुटनों में दर्द होने लगा और उसकी पेन्नी कहीं बर्फ में खो गई. वह पहाड़ी पर बिलकुल अकेला था. काँपते और सिसकते हुए वह खड़ा हुआ और लंगड़ाते-लंगड़ाते घर की ओर चल दिया.

ऑरेंज स्ट्रीट पर स्थित लगभग हर घर की छत पर सीगल बैठे हुए थे; लेकिन उसे वह सीगल दिखाईं न दिया जो उसका पीछा किया करता था. सब पक्षियों के मुँह दूसरी ओर थे और कोई भी उसकी ओर देख नहीं रहा था.

गीले आटे को देख कर माँ नाराज़ हुईं. माँ ने नहाने के लिए उसे गर्म पानी और पहनने के लिए सूखे कपड़े दिए. और खाने के बाद पीने के लिए एक गर्मागर्म पेय दिया जिसका स्वाद बहुत ही खराब था. फिर माँ ने पूछा, "क्या तुम्हारा घुटना अभी भी दर्द कर रहा है?"

"थोड़ा ठीक लग रहा है," ओब्दयिहा सोच रहा था कि पेन्नी खोने का दुःख भी काश कम हो जाता.

"फिर सो जाओ."

ओब्दयिहा ने प्रार्थना की और जैसे ही माँ कमरे से बाहर गई वह बिस्तर से उठ कर चुपके-चुपके खिड़की के पास आया. सीगल खिड़की के बाहर दिखाई नहीं दिया. वह बिस्तर पर आ कर लेट गया और सोचने लगा कि पक्षी कहाँ चला गया था.

अगले दिन और उसके अगले दिन और फिर उसके बाद कई दिनों तक जब भी वह घर से बाहर गया किसी पक्षी ने उसका पीछा न किया. हर रात ओब्दयिहा खिड़की से बाहर देखता लेकिन सीगल लौट कर न आया.

फिर एक दिन वह पक्षी उसे गोदी के पास दिखाई दिया. वहाँ समुद्र किनारे खड़ी मछली पकड़ने वाली एक छोटी नाव के पास कई सीगल थीं. वह उन पक्षियों के साथ था. लेकिन कुछ गड़बड़ थी. एक पुराना, ज़ंग-लगा मछली पकड़ने वाला काँटा उसकी चोंच से लटक रहा था.

"जब तुम मछली पकड़ने की डोरी से मछली चुराते हो तो ऐसा ही होता है. तुम्हारे साथ ठीक ही हुआ," ओब्दयिहा ने कहा और वहाँ से चल दिया.

वह काबलस्टोन स्ट्रीट में एक लोहार की दूकान के पास पहुंचा तो उसने देखा कि सीगल उसके पीछे-पीछे आ रहा था.

ओब्दयिहा रुक गया. पक्षी भी रुक गया. उसकी चोंच से लटकता मछली का काँटा हवा में हिल रहा था.

"अगर तुम शांत रहोगे तो मैं तुम्हारी चोंच में फंसा काँटा निकालने का प्रयास करूंगा."

सीगल स्थिर खड़ा रहा.

"मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाऊँगा," ओब्दयिहा ने कहा.

पक्षी ने उसे अपने निकट, और निकट आने दिया. एक ही पल में मछली का काँटा ओब्दयिहा के हाथ में था........

......और सीगल हल्की-हल्की आवाजें निकालता, आकाश में गोल-गोल उड़ रहा था. वह लाइटहाउस की ओर उड़ता चला गया. ओब्दयिहा उसे देखता रहा जब तक कि वह उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गया. फिर ज़ंग-लगा काँटा उसने फेंक दिया और घर चला गया.

जैसे ही उसने घर का प्रवेश द्वार खोला तंदूर में पकती ब्रैड की उसे सुगंध आई. किचन में उसी समय माँ और रैचेल ब्रैड को तंदूर से बाहर निकाल रहे थे. माँ ने ताज़ा, गर्म ब्रैड का एक टुकडा काट कर उसे दिया और उस पर मक्खन लगा दिया. एक स्टूल पर बैठ कर वह ब्रैड खाने लगा और खाते-खाते उसने उन्हें बताया कि पक्षी के साथ क्या हुआ था.

"अच्छा है," रैचेल ने कहा, "वह बुद्धू पक्षी अब तुम्हें दिखाई न देगा."

"हाँ," ओब्दयिहा ने कहा, "मुझे भी लगता है कि नहीं देखूँगा."

रात में सोने के समय माँ ने उसे बिस्तर में लिटा दिया और खिड़की के पास आई. "ओब्दयिहा," उसने कहा, "यहाँ देखो."

वह बिस्तर से कूद कर बाहर आया.

"क्या वह तुम्हारा सीगल नहीं है?"

बादल-रहित नीले आकाश में हवा की दिशा में मुँह किये एक सीगल चिमनी के ऊपर बैठा था.

"यह वही है," ओब्दयिहा ने कहा. "माँ वह ठिठुर रहा है."

"उसके पंख उसे गर्म रखते हैं. लेकिन तुम्हारे पंख नहीं हैं, ओब्दयिहा. इसके पहले कि तुम्हें ठंड लग जाए झटपट अपने बिस्तर में चले जाओ."

ओब्दयिहा फिर कूद कर बिस्तर में घुस गया और माँ ने चूम कर उसे शुभ रात्रि कहा.

तेज़, ठंडी हवा चल रही थी. ओब्दयिहा रज़ाई के अंदर आराम से लेट गया.

"माँ......."

"हाँ, ओब्दयिहा."

"वह सीगल मेरा मित्र है."

"मुझे प्रसन्नता है, ओब्दयिहा. शुभ रात्रि."

"और माँ......"

दरवाज़े की निकट माँ घूमी. हाथ में पकड़ी उसकी मोमबती टिमटिमाने लगी और लगभग बुझ ही गई. "हाँ, ओब्दयिहा," उसने कहा.

"मैंने उसकी सहायता की थी, इसलिए मैं भी उसका मित्र हूँ."